लोक-सुभाषित

ग्रामीण जनता अपने दैनिक व्यवहार में अनेक लोकोक्तियों, मुहावरों, पहेलियों, सूक्तियों आदि का प्रयोग करती है। इससे उनकी वचन-चातुरी का पता चलता है। लोकोक्तियों के प्रयोग से किसी उक्ति या कथन में शक्ति आ जाती है और श्रोताओं पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। मुहावरों के द्वारा भाषा में चुस्ती आती है और उसका स्वरूप सुन्दर बन जाता है। मन बहलाव के लिए पहेलियों का व्यवहार किया जाता है। बालकगण समुदाय में बैठकर एक दूसरे से पहेलियों को पूछकर बुद्धि की परीक्षा लिया करते हैं। संस्कृत में अनेक प्रकार की पहेलियाँ उपलब्ध होती हैं जिनमें बुद्धि का व्यायाम पाया जाता है।

बच्चा जब छोटा होता है तब उसकी माता या धाय उसे पालने में सुला कर लोरियाँ गाती हैं। इन लोरियों का उद्देश्य मनोहर संगीत पैदा कर बालक को निद्रा देवी की गोद में देना है। बड़े होने पर बालक अनेक प्रकार के खेलों को खेलते समय विभिन्न गीत गाते हैं। जनता के जीवन में ये लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ, सूक्तियाँ, मुहावरे, पालने और खेल के गीत बिखरे पड़े हैं। अतः इनको 'लोक-सुभाषित' का नाम दिया गया है।

१. लोकोक्तियाँ

लोक साहित्य में लोकोक्तियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा किसी कथन में तीव्रता और प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। इससे भाषा में बल आ जाता है और यह श्रोताओं के हृदय पर अपना प्रभाव डालती है।

लोकोक्तियाँ अनुभवसिद्ध ज्ञान की निधि हैं। मानव ने युग-युग से जिन तथ्यों का साक्षात्कार किया है उनका प्रकाशन इनके माध्यम से होता है। ये चिरकालीन अनुभूत ज्ञान के सूत्र हैं। समास रूप में चिरसंचित अनुभूत ज्ञानराशि का प्रकाशन इनका प्रधान उद्देश्य है। शताब्दियों से किसी जाति की विचारधारा किस ओर प्रवाहित हुई है, यदि इसका दिग्दर्शन करना हो तो उस जाति की लोकोक्तियों का अध्ययन आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

लोकोक्तियों की विशेषताएँ

(१) लोकोक्तियों की सबसे पहली विशोषता है इनकी समास शैली। इन कहावतों में इनके रचयिताओं ने गागर में सागर भरने का प्रयास किया है। लोकोक्तियाँ आकार में तो छोटी होती हैं परन्तु इनमें विशाल भाव-राशि सिमटी पड़ी रहती है। उदाहरण के लिए 'तीन कनौजिया तेरह चूल्हा' को ही लीजिए। इन चार शब्दों में बहुत बड़ा भाव भरा पड़ा है। इसका अर्थ यह है कि कान्यकुब्ज ब्राह्मण अपने को श्रेष्ठ समझते हैं जैसा कि 'कान्यकुब्जाः द्विजाः श्रेष्ठाः' इस उक्ति से स्पष्ट होता है। अतः वे खान-पान में छुआ-छूत का बड़ा विचार रखते हैं। वे अपनी जाति वालों का भी छुआ हुआ पका अन्न नहीं खाते। वे आपस में इतना भेद-भाव रखते हैं कि यदि तीन भी कनौजिया होगा तो भोजन पकाने के लिए तेरह चूल्हों की आवश्यकता पड़ेगी। इतना अर्थ विस्तार इन चार शब्दों में भरा पड़ा हुआ है। एक दूसरी कहावत है—"चार कवर भीतर, तब देवता पीतर" अर्थात् भोजन करने के पश्चात् ही देवपूजा की चिन्ता करनी चाहिए। इस छोटी सी लोकोक्ति में भौतिकवादी चार्वाक सम्प्रदाय के सिद्धान्त की ओर संकेत किया गया है। चार्वाक का यह मत था कि—

"यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः।।"

चार्वाक मतानुयायी देवताओं में विश्वास न कर ऐहिक सुख को ही परम पुरुषार्थ मानते थे। ये लोग भोजन को ही अधिक महत्त्व देते थे। इस लोकोक्ति के द्वारा उन पर व्यंग्य भी किया

Scanned with CamScanner

गया है। लोकोक्तियों की यही लघुता उनके प्रचुर प्रभाव का कारण है।

(२) लोकोक्तियों की दूसरी विशेषता—अनुभूति और निरीक्षण है लोकोक्तियों में मानव जीवन के युग-युग की अनुभूतियों का परिणाम और निरीक्षण शक्ति अन्तर्निहित है। काशी-निवास के सम्बन्ध में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है

"राँड़, साँड़, सीढ़ी, संन्यासी;
इनसे बचै तो सेवै कासी।"

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस उक्ति में बहुत कुछ सत्य का अंश छिपा हुआ है। लोगों ने चिर अनुभव के पश्चात् ही इसका निर्माण किया होगा।

घाघ और भड्डरी के नाम से हिन्दी में बहुत-सी लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं। इनमें ऋतु सम्बन्धी खेती के लिये उपयोगी बातें कही गई हैं। इसमें सन्देह नहीं कि घाघ और भड्डरी ने अपनी पैनी निरीक्षण शक्ति के बल से ऋतु सम्बन्धी तथ्यों का अनुसन्धान करके ही इन लोकोक्तियों का निर्माण किया होगा। जब विज्ञान की इतनी उन्नति नहीं हुई थी, जब ऋतु सम्बन्धी तथ्यों को जानने के लिए वेधशालाएँ नहीं बनी थीं, उस समय लोग अपने चिरसंचित अनुभव और निरीक्षण शक्ति के द्वारा आगामी दिनों में ऋतु में क्या परिवर्तन होगा इसकी घोषणा किया करते थे। यह परम्परा सम्भवतः बहुत प्राचीन है। आकाश में चमकने वाली चंचला के रंग को देखकर निरीक्षण-सम्पन्न व्यक्ति प्रभंजन आने तथा अकाल पड़ने की सूचना देते हैं—

वाताय कपिला विद्युत, आतपायातिलोहिनी।
कृष्णा भवति शस्याय, दुर्भिक्षाय सिता भवेत्।।

प्राचीन काल के ये ऋतु-विशेषज्ञ किसी यंत्र की सहायता से नहीं, अपितु अपनी निरीक्षण शक्ति के द्वारा ही ऋतुओं के परिवर्तन को उद्घोषित करते थे। वायु परीक्षा सम्बन्धी निम्नांकित कहावत में विभिन्न दिशाओं से वायु चलने से उसका क्या प्रभाव पड़ता है इसका सुन्दर रीति से दिग्दर्शन कराया गया है।[१]

"जो पै पवन पुरब से आवै, उपजै अन्त मेघ झर लावै।
अगिन कोन जो बहै समीरा, पड़ै काल दुःख सहै सरीरा।
दखिन बहै जल थल अलगोरा, ताहि समय जूझै बड़ बीरा।
नैऋत कोन बूँद ना परै, राजा परजा भूखन मरै।
पच्छिम बहै नीक कर जानो, पड़ै तुसार तेज उर मानो।
उत्तर उपजै बहु धन धाना, खेत बात सुख करै किसाना।
कोन इसान दुन्दुभी बाजै, दही भात भोजन सब गाजै।
जो कहु हवा अकासे जाय, परै न बूँद काल परि जाय।
दखिन पच्छिम आधो समयो, सहदेव जोसी ऐसे भनयो।।"

Scanned with CamScanner

घाघ ने एक दूसरी जगह पर लिखा है कि—

"सावन में पुरवइया, भादों में पछियाँव।
हरवाहे हर छोड़ दे, लरिका जाय जियाव।।"

अर्थात् सावन में पुरवैया हवा और भादों में पछुवा हवा चले तो वर्षा न होने के कारण बड़ा कष्ट होता है। यदि पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में पुरवैया हवा चले तो इतनी अधिक वर्षा होगी कि सूखी नदी में नाव चलने लगेगी।

"जो पुरुवा पुरवाई पावै,
सूखी नदिया नाव चलावै।।"

वर्षा विज्ञान के सम्बन्ध में भी घाघ ने बड़ी सटीक उक्तियाँ कही हैं। जैसे—

"माघ क उसम जेठ के जाड़
पहिलै बरखा भरिगा ताल।
कहै घाघ हम होब वियोगी
कुवाँ खोदि के धोइहैं धोबी।।"

अर्थात् यदि माघ में गर्मी पड़े और जेठ में शीत की प्रधानता हो, और यदि प्रथम वर्षा में ही तालाब भर जाय तो अवर्षण के कारण धोबी कुँआ खोदकर कपड़ा धोयेगा। घाघ की दूसरी उक्ति है कि[1]—

"रोहिनी बरसै मृग तपै, कुछ-कुछ अद्रा जाय।
कहै घाघ घाघिनि से, स्वान भात नहिं खाय।।"

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में वर्षा हो, मृगशिरा नक्षत्र में खूब गर्मी पड़े और आर्द्रा में भी कुछ वर्षा हो तो इतना अधिक अन्न पैदा होगा कि कुत्ता भी भात को नहीं खायेगा।

इसी प्रकार घाघ ने जोताई, बोआई, निराई, कटाई, मड़ाई और ओसाई आदि के सम्बन्ध में उक्तियाँ कही हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि घाघ कोई पक्का किसान था जिसने खेती-विज्ञान सम्बन्धी अपनी निरीक्षण शक्ति का परिणाम इन लोकोक्तियों में रखा है।

(३) लोकोक्तियों की तीसरी विशेषता है इनकी सरलता। ये लोकोक्तियाँ बड़ी सरल भाषा में निबद्ध हैं जिससे सुनते ही इनका अर्थ हृदयंगम हो जाता है। इनकी यही सरलता इनके अतिशय प्रभाव उत्पन्न करने का कारण है। जो वस्तु अर्थकठिन के कारण समझ में नहीं आती उसका प्रभाव हृदय पर नहीं पड़ता परन्तु कहावतें अपनी सरसता और सरलता के कारण हृदय पर सीधे चोट करती हैं। जैसे—

"नसकट पनही, बतकट जोय।
जो पहिलौठी बिटिया होय।
पातर कुरी, बौरहा भाय,
घाघ कहै, दुःख कहाँ समाय।।"

Scanned with CamScanner